223hi08

8

प्राचीन भारत में धर्म और दर्शन

जैसे ही नवम्बर और दिसम्बर का महीना आता है, हम बाजार में नये कैलेण्डरों की बाढ़ सी पाते हैं। कुछ कैलेण्डर तो बहुत रंगीन होते हैं। उनमें विभिन्न रंगों से चित्र बने होते हैं। कुछ में तो तिथियों पर छोटे छोटे चित्र भी बने हुए होते हैं। वे अवकाश के दिन होते हैं जिनकी हम प्रतीक्षा करते रहते हैं। आप भी उनकी प्रतीक्षा करते होंगे। हाँ वे हमारे धार्मिक पर्व होते हैं या राष्ट्रीय पर्व होते हैं और भारत में बहुत से धर्म हैं जो भली प्रकार फल फूल रहे हैं। सड़कों पर शोभा यात्राएँ, अच्छा खाना, कपड़े, उपहार, लोगों का अपने अपने पूजा स्थलों पर पूजा करना, एक दूसरे को शुभ कामनाएँ देना एक सामान्य दृश्य है। हाँ, भारत वास्तव में एक बहुत ही सुन्दर, प्यारा और रहने के लिए जीवन्त देश है। यह इसलिए क्योंकि धर्म भारत में प्राचीन काल से ही लोगों में जीवन को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण घटक रहा है। वास्तव में धर्म के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में धर्म के विविध दृश्यों का अध्ययन निस्सन्देह बहुत रोचक होगा। धर्म और दर्शन का सम्बन्ध बहुत गहरा है, इसलिए परस्पर सम्बद्ध तरीके से ही दोनों की वृद्धि और विकास को समझना होगा। इस पाठ में आप प्राचीन भारत में धर्म और दर्शन के विकास के बारे में पढ़ सकेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :–

1. धर्म के अर्थ की व्याख्या कर सकेंगे;
2. प्राचीन भारत के विभिन्न धार्मिक-आंदोलनों की विशेषताओं को पहचान सकेंगे;
3. वैदिक दर्शन के छः मतों के विचारों की व्याख्या कर सकेंगे;
4. चार्वाक-दर्शन की भूमिका का परीक्षण कर सकेंगे;
5. जैन-दर्शन के यथार्थ सिद्धान्त की व्याख्या कर सकेंगे;
6. बौद्ध-दर्शन के योगदान की समीक्षा कर सकेंगे।

8.1 धर्म

धर्म आत्मा का विज्ञान है। नैतिकता और आचार नीति धर्म पर ही आधारित हैं। आरंभिक काल से ही धर्म ने भारतीयों के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। धर्म ने अपने से जुड़े लोगों के भिन्न-भिन्न वर्गों के फलस्वरूप अनेक रूप धारण कर लिए। विभिन्न जन-वर्गों के धार्मिक-विचार धारणाएँ और आचार अलग-अलग हुआ करते थे और समय व्यतीत होने के साथ-साथ धर्म में परिवर्तन और विकास होने लगा। भारत में धर्म कभी भी अपने रूप में स्थायी नहीं रहा बल्कि आन्तरिक गतिपूर्ण शक्ति से परिवर्तित होता रहा।

> भारत में प्रत्येक दर्शन सत्य की खोज है जो एक ही है और जो सदा और सर्वदा एक सा ही रहता है, खोजने के रास्ते अलग-अलग हैं, तर्क अलग हैं लेकिन उद्देश्य एक ही है - सत्य तक पहुँचने का प्रयत्न।
>
> ''मुझे गर्व है कि मेरा सम्बन्ध उस धर्म से है जिसने विश्व को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का उपदेश दिया। हम न केवल सार्वभौमिक सहिष्णुता में विश्वास करते हैं बल्कि हम सभी धर्मों को 'सत्य' समझते हैं।''
>
> स्वामी विवेकानन्द शिकागो में 1893 की विश्व धर्म संसद के अवसर पर

भारतीय आध्यात्मिकता की जड़ें तो इस देश की प्राचीन दार्शनिक और धार्मिक परम्पराओं में गहरी जमी हुई हैं। भारत में दर्शन का जन्म जीवन के रहस्यों और अस्तित्व की खोज से हुआ। भारतीय ऋषियों ने इन्द्रियों और मन से परे जाकर विशिष्ट तकनीकों का विकास किया जिसे योग कहते हैं। इन तकनीकों की सहायता से चेतना की गहराईयों में उतर कर मानव और विश्व की वास्तविक प्रकृति के विषय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों की खोज की।

ऋषियों ने जाना कि मनुष्य वास्तव में शरीर मात्र नहीं है, न ही केवल मन है जो परिवर्तनशील है और नाशवान है बल्कि वास्तविक वह तत्व है जो अमर है, शाश्वत है, और पवित्र चेतना है। इसको उन्होंने आत्मा कहा। आत्मा ही वस्तुत: मानवीय ज्ञान, प्रसन्नता और शक्ति का स्रोत है। ऋषियों ने यह भी जाना कि व्यक्ति में निहित आत्मा असीम चेतन तत्व का ही अंश है जिसे ब्रह्म कहा जाता है। ब्रह्म ही अन्तिम सत्य है और सृष्टि का कारण है। अपनी वास्तविक प्रकृति का अज्ञान ही मनुष्य के सभी दु:खों और बन्धनों का कारण है। आत्मा और ब्रह्म का सही ज्ञान के द्वारा ही दु:खों और बन्धनों से मुक्ति अमरता शाश्वत शान्ति और पूर्णता की अवस्था प्राप्त करना संभव है, यही मोक्ष है। धर्म, प्राचीन भारत में, एक जीवन शैली था जो मनुष्य को अपनी सत्यप्रकृति की पहचान करके मोक्ष प्राप्त करने में समर्थ बनाता था।

दर्शन हमें सत्य का शुद्ध स्वरूप दिखाता है और धर्म जीवन की सही दृष्टि देता है तथा धर्म उसकी प्राप्ति करवाता है। दर्शन सिद्धान्त है और धर्म अभ्यास है इस प्रकार प्राचीन भारत में दर्शन और धर्म एक दूसरे के पूरक रहे हैं।

> हम उसको सुनें जो हमारे मनों को प्रकाश देता है, हम चारों ओर उसी दिव्य ज्योति के दर्शन करें, हम अपने अन्दर उस पवित्र शक्तिमान की उपस्थिति का अनुभव करें और हमारे शरीर और बुद्धि के सभी कार्य उसी परमपिता ईश्वर की सेवा में लगे रहें, हमें शाश्वत शान्ति प्राप्त हो।
>
> ऋग्वेद 1.89

8.2 पूर्व वैदिक और वैदिक धर्म

पूर्व और पर ऐतिहासिक स्थलों की पुराताताात्विक खोजों से पता चलता है कि ये लोग उस सृजनशील परमात्मा की पवित्रता में विश्वास करते थे और दिव्य पुरुष के नरपक्ष और नारीपक्ष की पूजा करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि वे प्रकृति की शक्तियों के पुजारी थे जैसे सूर्य और चन्द्र। यह विश्वास आर्यो के प्रारम्भिक साहित्य से भी पुष्ट होता है। आर्यो के धार्मिक विश्वासों और परम्पराओं के विषय में हमें ऋग्वेद से भी पता चलता है। वे अनेक देवताओं में विश्वास करते थे जैसे इन्द्र, वरुण, अग्नि, सूर्य और रुद्र। यज्ञ और देवताओं के सम्मान में दी गई भोज्य सामग्री और पेय सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करना प्रमुख धार्मिक कृत्य थे। सामवेद और यर्जुवेद यज्ञीय प्रक्रिया के विभिन्न पक्षों का विस्तृत वर्णन करते हैं और यह यज्ञ प्रक्रिया आगे चलकर ब्राह्मणों में और भी अधिक स्पष्ट की गई। अथर्ववेद में बहुत प्रकार के अन्धविश्वास भी है। ऋषि वैदिक कर्मकाण्ड की उपयोगिता और प्रभाव के विषय में सन्देह करने लग गये थे। बहुदेवतावाद का स्थान एक देवतावाद ले रहा था और विभिन्न देवता एक ही परम सत्ता के विविध रूप माने जाने लगे थे।

- युगों युगों से भारत जीवन और विचारों की मूलभूत समस्याओं से जूझता रहा है। भारत में दर्शन का उदय सत्य की खोज से प्रारम्भ हुआ। सत्य न केवल लक्ष्य के रूप में है बल्कि व्यक्तित्व के विकास से जुड़ा हुआ है, जिससे अन्त में सर्वोच्च स्वतन्त्रता, आनन्द और ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसके लिए न केवल अनुशासित दार्शनिक तर्क की आवश्यकता होती है बल्कि इसके साथ चारित्रिक अनुशासन और भावनाओं एवं संवेगों पर भी नियन्त्रण आवश्यक है।

- अत: गम्भीर दार्शनिक विश्लेषण और उन्नत आध्यात्मिक अनुशासन भारतीय दर्शन की सर्वमान्य विशेषता है और इसीलिए यह पाश्चात्य दर्शन से बिल्कुल अलग है।

- यह आशा की जाती है कि यह न केवल प्राचीन राष्ट्र की आध्यात्मिक आकांक्षओं को स्पष्ट करेगा बल्कि इन आकांक्षाओं की आज की दुनिया के साथ प्रासंगिकता भी प्रकट करेगा जिससे सार्वभौमिक बन्धुत्व की श्रृंखला भी मजबूत होगी।

- भारतीय दर्शन कोई अटकलबाजी न होकर प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत अनुभवों का परिणाम है। एक सच्चा दार्शनिक वह है जिसका जीवन और व्यवहार वैसा ही है जैसा वह उपदेश देता है।

वैदिक साहित्य का आरण्यक और उपनिषद् अंश एक प्रगतिशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उपनिषद् धर्मों के मूल और विकास की प्रारम्भिक अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें वे तत्वमीमांसीय अवधारणाएँ हैं जिनका प्राचीन और मध्ययुगीय भारत के परवर्ती धार्मिक नेताओं और सुधारकों ने प्रयोग किया। कुछ ने परम्परागत दृष्टिकोण अपनाया जबकि कुछ अन्य उदारवादी दृष्टिकोण लेकर चले।

8.3 नास्तिक धार्मिक आन्दोलन

प्रथम शताब्दी ईसापूर्व के मध्य में महावीर और बुद्ध जैसे महापुरुषों से जुड़े धार्मिक आन्दोलन इस श्रेणी में आते हैं। इस काल में और भी कई अन्य मतमतान्तर भी थे। इनमें से कुछ के द्वारा प्रचारित मत वैदिक परम्परा के अनुरूप नहीं थे। उन्होंने वेदों की सर्वोच्चता और दिव्य मौलिकता को नकार दिया। वैदिक ऋषि जो ब्राह्मण ऋषि थे, उनसे भिन्न अनेक नये आचार्य क्षत्रिय थे। बौद्ध और जैन दोनों ही धर्म प्रारम्भ में नास्तिक थे। लेकिन बौद्ध ध र्म ने कर्म के सिद्धान्त को माना और पुनर्जन्म में भी विश्वास प्रकट किया। उन्होंने लोगों के अस्तित्व को ही दु:खों से भरा हुआ माना। इनमें से बहुत से विचार प्रमुख उपनिषदों में भी पाये जाते हैं।

8.4 आस्तिक धर्म

आस्तिक और नास्तिक धर्म लगभग एक ही साथ विकसित हुए। इन धर्मों के प्रधान देवता वैदिक नहीं थे बल्कि उन्हें लोक-परंपरा से ग्रहण किया गया था। इनमें पूर्व-वैदिक तथा उत्तर-वैदिक लोक-तत्त्वों का बाहुल्य था। ऐसे धर्म-आंदोलनों की प्रधान प्रेरक-शक्ति भक्ति थी। भक्ति के अंतर्गत कोई भक्त नैतिकता के साथ निजी ईश्वर में प्राणपण से निष्ठा रखता है और भक्ति-प्रधान धर्मनिष्ठा का विकास विभिन्न धर्मों मसलन वैष्णव, शैव, शाक्त धर्म आदि के रूप में हुआ। समय बीतने के साथ इन्हें सनातनी ब्राह्मणवाद के घटक के रूप में देखा गया। इन धर्मों का बौद्ध तथा जैन धर्म के लोकप्रिय प्रकारों पर गहरा असर पड़ा।

8.5 लोक-धर्म

आदिकालीन धर्म-विश्वासों के अंतर्गत यक्ष-यक्षिणी, नाग तथा अन्य लोक-देवताओं की पूजा की प्रधानता थी। इसमें भक्ति ने आगे चलकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। जन सामान्य के बीच पूजा की इस पद्धति के प्रसार के विपुल साक्ष्य आरंभिक साहित्य तथा पुरातत्त्व में मिलते हैं।

वासुदेव कृष्ण पूजा : पाणिनी की अष्टाध्यायी के एक सूत्र में वासुदेव (कृष्ण) को पूजने वालों का उल्लेख मिलता है। छांदोग्य उपनिषद् में भी देवकी-पुत्र कृष्ण का उल्लेख मिलता

है जो सूर्य-पूजक ऋषि घोर अंगिरस के शिष्य थे। बहुत से लोग वासुदेव (कृष्ण) की पूजा निजी ईश्वर के रूप में करते थे और इन भक्त लोगों को प्रारम्भ में भागवत के रूप में जाना गया। वासुदेव-भागवत संप्रदाय धीरे-धीरे बढ़ा-पनपा और इसने अपने भीतर वैदिक तथा ब्राह्मणवादी देवों जैसे विष्णु (पहले इन्हें सूर्य का एक रूप माना जाता था) और नारायण (विश्व देव) को समाहित कर लिया। उत्तरवर्ती गुप्त काल से इस भक्ति-संप्रदाय को वैष्णण कहा जाने लगा जिससे इसके भीतर वैदिक वैष्णव तत्त्वों की प्रधानता की जानकारी मिलती है। इसमें अवतारवाद पर जोर दिया जाता था।

8.6 दक्षिण भारत में वैष्णव-आंदोलन

गुप्तकाल के अंत से लेकर 13वीं सदी ईसवी के पहले दशक तक वैष्णव-आंदोलन का इतिहास मुख्यतया दक्षिण भारत से संबंधित है। वैष्णव भक्त-कवि 'अलवरों' (विष्णु की भक्ति में निमग्न व्यक्तियों के लिए तमिल भाषा का शब्द) ने विष्णु की भक्ति तथा उसमें एकान्त-निष्ठा के गीत गाए। इनके गीतों को समग्र रूप से 'प्रबंध' कहा जाता है।

8.7 शैव-धर्म

वैष्णव-धर्म के विपरीत, शैव-धर्म की उत्पत्ति अति प्राचीन है। पाणिनि ने शिव-पूजकों के एक समूह का उल्लेख शिव-भागवत् के रूप में किया है। ये अपने हाथ में त्रिशूल और दंड धारण करते थे तथा पशुओं की खाल से बने वस्त्र पहनते थे। पाणिनी ने शिव-भक्तों के प्रभावी विचित्र कर्मकाण्डों का अप्रत्यक्ष तथा संक्षिप्त उल्लेख किया है।

दक्षिण भारत में शैव आंदोलन : दक्षिण भारत में शैव-धर्म का विकास 63 संतों के एक समूह के प्रयास से हुआ। इन्हें तमिल भाषा में शिव-भक्त कहा जाता है। तमिल भाषा में लिखित इनके भावना-प्रधान गीतों को त्वरम् स्रोत कहा जाता है। इसका एक अन्य नाम द्रविड़ वेद भी है। इसे स्थानीय शिव-मंदिर में धार्मिक -अवसरों पर गाया जाता है। नयनारों में सभी जातियों के लोग थे। सैद्धान्तिक स्तर पर इस पक्ष को समर्थन बहुत से शैव विद्वानों ने दिया। इनके नाम शैव-आंदोलन के विभिन्न रूपों जैसे आगमंत, शुद्ध तथा वीर-शैव से जुड़े हैं।

> दर्शन को एक सिद्धान्त देना चाहिए जो अपनी प्रकृति में सरलतम् हो और साथ ही उन सभी सिद्धान्तों को भी स्पष्ट करे जो विज्ञान द्वारा अनसुलझे छोड़ दिये गये। इसी के साथ साथ विज्ञान के अन्तिम परिणामों को भी साथ ले कर चले और साथ ही एक ऐसा धर्म स्थापित करे जो सार्वभौमिक हो और मतमतान्तरों या अन्धविश्वासों से सीमित न कर दिया गया हो।
>
> जब हम दर्शन को एक विज्ञान के रूप में देखते हैं, इससे तात्पर्य है व्यवस्थाबद्ध विचार श्रंखला जिसमें एक विचार श्रंखला दूसरे विचार को न काटे और पूर्ण श्रंखला एक समस्त पूर्णता को प्रकट करे जो सम्बद्ध हो।

विज्ञान का अर्थ है वह ज्ञान जो अंशत: जुड़ा हुआ है, लेकिन दर्शन से अभिप्राय है पूर्ण रूप से संयुक्त ज्ञान, इसे जानने के पीछे अज्ञात शक्ति है परन्तु उसी अज्ञान के क्षेत्र में आत्मा, स्वर्ग, ईश्वर और सभी से जुड़े हुए सिद्धान्तों का समाधान छुपा हुआ है।

हरबर्ट स्पेन्सर

8.8 लघु धार्मिक-आंदोलन

सूर्य पूजा तथा नारी सिद्धान्तों (शक्ति) की पूजा को इस अवधि में कभी उतना महत्त्व नहीं मिला जितना दो ब्राह्मणवादी धर्म-संप्रदायों (शैव और वैष्ण धर्म) को। देवत्व का नारी स्वरूप पूर्व वैदिक काल की उपज रहा होगा। वैदिक काल में समृद्धि तथा शक्ति-स्वरूप मातृदेवी पर लोग आस्था रखते थे। फिर भी, देवी-पूजकों के एक विशिष्ट संप्रदाय की उपस्थिति के स्पष्ट साक्ष्य अपेक्षाकृत बाद के समय से मिलते हैं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, भारत में सूर्य-पूजा आदि काल से होती आ रही है। वैदिक तथा महाकाव्यों में वर्णित पुरा-कथाओं में सूर्य तथा उसके विभिन्न रूपों की महत्वपूर्ण भूमिका है। किन्तु ये काफी समय के बाद ही धार्मिक आंदोलनों के मुख्य विषय-वस्तु बने। ईसवी सन् की आरंभिक सदियों में पूर्वी ईरान (शकद्वीपी) के सूर्यपूजक-संप्रदाय का प्रसार उत्तर भारत में हुआ। लेकिन इस देवता की धार्मिक आन्दोलनों में प्रमुख स्थान बहुत बाद में मिला।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. वैदिक साहित्य का कौनसा अंश प्रगतिशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है?

   ....

2. बौद्ध धर्म द्वारा किस सिद्धान्त का समर्थन किया गया?

   ....

3. बौद्ध धर्म और जैन धर्म को प्रसिद्ध करने वाले सम्प्रदायों के नाम बताइए।

   ....

4. वैदिक युग में नारी सिद्धान्तों का सम्मान कैसे होता था?

   ....

5. शैव आन्दोलनों के विभिन्न स्वरूप क्या हैं?

   ....

8.9 वैदिक दर्शन

ऋग्वेद-काल के लोगों का धर्म बहुत सरल था। वे प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों की देव-रूप में पूजा करते थे। उत्तर वैदिक-काल में ही आत्मा के सत्-स्वरूप अथवा सार्वभौम सिद्धान्त या ब्रह्म की प्रकृति के बारे में सुनिश्चित विचार और दर्शन का विकास हो सका। इन वैदिक दार्शनिक अवधारणाओं से बाद के दिनों में छः दर्शन-संप्रदायों का उद्‌भव हुआ जिन्हें षड्दर्शन कहा जाता है। ये सभी दर्शन-संप्रदाय आस्तिक दर्शन कहलाते हैं क्योंकि ये वेदों की सत्ता की प्रामाणिकता स्वीकार करते हैं। अब हम लोग भारतीय दर्शन के छः संप्रदायों के बारे में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे।

सांख्य-दर्शन

सांख्य दर्शन की मान्यता है कि सृष्टि में पुरुष और प्रकृति नामक दो परम सत्ता हैं। पुरुष और प्रकृति परस्पर पूर्णतया स्वतंत्र और निरपेक्ष हैं। सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष विशुद्ध चेतना है इसीलिए इसमें परिष्कार या परिवर्तन नहीं हो सकता। प्रकृति के तीन निर्णायक घटक या गुण हैं - सत्त्व, रज और तम्। इन्हीं गुणों में परिवर्तन अथवा रूपान्तरण के परिणामस्वरूप सभी वस्तुओं में परिवर्तन होते हैं। सांख्य-दर्शन जगत की उत्पत्ति की व्याख्या के क्रम में पुरूष और प्रकृति के बीच कुछ संबंध स्थापित करने की कोशिश करता है। इस दर्शन के संस्थापक कपिल थे। उन्होंने सांख्य-सूत्र लिखा। वस्तुतः सांख्य शाखा द्वारा उन दिनों के उदार चिंतको के सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गए और सिद्धांत के द्वारा सृष्टि की रचना की व्याख्या की।

योग

योग का शाब्दिक अर्थ होता है दो मूल तत्त्वों का मेल। योग का मूल पतंजलि के योग सूत्र में मिलता है जो दूसरी शताब्दी ई.पू. में लिखा गया माना जाता है। मानसिक कार्य-व्यापार की शुद्धि, नियंत्रण और परिवर्तन के माध्यम से योग व्यवस्थित रूप में पुरुष को प्रकृति से मुक्त करता है। योग-क्रियाएँ शरीर, प्राण और इंद्रियों का नियमन करती हैं। इस कारण, इस दर्शन को मोक्ष अथवा मुक्ति प्राप्त करने का साधन भी माना जाता है। यह मोक्ष अष्टांग-योग की साधना से प्राप्त किया जा सकता है। अष्टांग-योग के अंतर्गत आत्म-नियंत्रण (यम), नियम-पालन (नियम), आसन (विभिन्न योगासन), श्वास-नियंत्रण (प्राणायाम), विषय-वासनाओं से अलगाव (प्रत्याहार), किसी एक वस्तु पर मन केंद्रित करना (धारणा), चुनी हुई वस्तु पर ध्यान-मग्न होना (ध्यान) तथा मन और पदार्थ के द्वैत की समाप्ति (समाधि) द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। योग-दर्शन में ईश्वर की मान्यता गुरु और शिक्षक के रूप में है।

न्याय

न्याय-दर्शन तर्कपूर्ण रीति की तकनीक से सम्बद्ध माना जाता है। न्याय-दर्शन के अनुसार वैध ज्ञान को ही यथार्थ ज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाता है यानि किसी वस्तु को

उसी रूप में जानना जिस रूप में वह है। उदाहरणार्थ – साँप को साँप तथा प्याले को प्याले के रूप में समझना। न्याय-दर्शन ईश्वर को सृष्टि का रचयिता, पालनकर्ता तथा संहारकर्ता मानता है। गौतम को न्याय-सूत्र का रचयिता कहा जाता है।

वैशेषिक

वैशेषिक पद्धति विश्व का यथार्थ और वस्तुनिष्ठ दर्शन है। इस दर्शन के अनुसार यथार्थ पदार्थ के बहुत से आधार और वर्ग हैं जो कि द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय हैं। वैशेषिक दर्शन के चिन्तकों की मान्यता है कि विश्व की समस्त वस्तुएँ पाँच तत्वों — पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से बनी हैं। वे ईश्वर को निर्देशक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार करते हैं। जीवित प्राणियों को उनके कर्म के सद्गुण अथवा दुर्गुण के अनुसार पुरस्कार अथवा दंड मिलता है। सृष्टि की रचना और उसका संहार एक अनवरत प्रक्रिया है और ईश्वर की इच्छानुसार यह क्रम चलता है। कणाद् ने वैशेषिक-दर्शन का मूल ग्रंथ लिखा।

कणाद द्वारा लिखित मूल ग्रंथ पर बहुत सी टीकाएँ लिखी गईं किन्तु प्रशस्तपाद द्वारा छठी शताब्दी में लिखित टीका इनमें सर्वश्रेष्ठ है। वैशेषिक दर्शन सृष्टि की रचना को आजीवक सिद्धान्त के आधार पर स्पष्ट करता है। अणुओं और परमाणुओं के संयोजन से द्रव्य बना और इसी प्रकार सृष्टि के निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

मीमांसा

वस्तुतः मीमांसा-दर्शन वेद के संहिता और ब्राह्मण खंड की व्याख्या, प्रयोग और उपयोग से संबंधित है। मीमांसा के अनुसार वेद शाश्वत हैं और उनमें समस्त ज्ञान समाहित है और धर्म का अर्थ होता है वेद-विहित कर्तव्यों का सम्यक् रीति से पालन करना। यह दर्शन न्याय-वैशेषिक को अपने में समाहित करता है और वैध ज्ञान पर बल देता है। इसके मूल ग्रन्थ के रूप में जैमिनि कृत सूत्र है जिसकी रचना तीसरी सदी ईसवी पूर्व हुई। इस दर्शन के साथ कुमारिल भट्ट और शबर स्वामी का नाम जुड़ा हुआ है।

जैमिनि पद्धति के अनुसार धर्म कर्म के फल का नियामक है, अर्थात् धर्म का नियम। यह दर्शन वेद के कर्मकाण्ड यज्ञ पर बल देता है।

वेदान्त

वेदान्त-दर्शन के अंतर्गत उपनिषदों अर्थात् वेद के अंतिम भाग का दर्शन आता है। शंकराचार्य ने उपनिषद्, ब्राह्मण, ब्रह्म-सूत्र और भगवद्गीता पर भाष्य लिखा। शंकराचार्य के दार्शनिक-विचारों को अद्वैत-वेदान्त कहा जाता है। अद्वैत का शाब्दिक अर्थ होता है द्वैत का नकारना अर्थात् एक परम में विश्वास। शंकराचार्य ने प्रतिपादित किया कि परमसत् एक है और वह ब्रह्म है।

वेदान्त-दर्शन के अनुसार- ''ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या है और उनका विश्वास था कि ब्रह्म और आत्मा में कोई अन्तर नहीं है शंकराचार्य का विश्वास है कि ब्रह्म सत्य, अपरिवर्तनीय, अन्तिम ज्ञान स्वरूप है। ब्रह्म का ज्ञान ही समस्त वस्तुओं का सार तथा परम सत्य है। रामानुज एक अन्य अद्वैतवादी विद्वान में से थे।

दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों में से एक ऐसा दर्शन निकलकर आया, जो कि दार्शनिक विचारों की पराकाष्ठा तक पहुंचा है वही वेदांत दर्शन कहा जाता है। वेदांत दर्शन प्रत्यक्ष अहम् की सत्ता को स्वीकार नहीं करता, जैसा कि हम जानते है और इस विषय में वेदांत विश्व के दर्शन के इतिहास में अपना अद्वितीय स्थान रखता है।

वेदान्त एक दर्शन और एक धर्म है। दर्शन के रूप में यह उस सत्य का प्रतिपादन करता है जो सभी युगों और सभी देशों के महान दार्शनिकों एवं उच्च कोटि के विचारकों द्वारा खोजे गये। वेदान्त दर्शन हमें शिक्षा देता है कि विभिन्न धर्म अनेक मार्गों के समान हैं जो एक ही लक्ष्य तक पहुंचते हैं।

वेदांन्त (वेद या ज्ञान का अंत) से अभिप्राय उपनिषदों से है जो प्रत्येक वेद के अन्त में लिखे गए और जिनमें सत्य का वास्तविक रूप प्रतिपादित किया गया है।

वेदान्त का केन्द्रीभूत संदेश है कि प्रत्येक गतिविधि विवेक द्वारा संचालित होनी चाहिए। मन गलत काम कर सकता है परन्तु बुद्धि हमें समझाती है कि यह काम हमारे हित में है या नहीं। वेदान्त एक साधक को बुद्धि के द्वारा आत्म जगत तक ले जाता है। चाहे हम आध्यात्मिकता की ओर योग के माध्यम से जाएँ, या ध्यान, या भक्ति से, अन्त में हमारे अन्दर अभिवृतियों के परिवर्तन और दिव्य प्रकाश की अनुभूति होनी चाहिए।

8.10 चार्वाक-दर्शन

चार्वाक-दर्शन का प्रणेता बृहस्पति को माना जाता है। इसकी चर्चा वेद और बृहदारण्यक उपनिषद् में मिलती है। अत: माना जाता है कि ज्ञान की इस शाखा का उद्भव इन ग्रंथों से पहले हुआ होगा। इस दर्शन की मान्यता है कि ज्ञान चार भौतिक पदार्थो के मेल से बनता है और मृत्यु के बाद इसका कोई अस्तित्व नहीं रहता। चार्वाक भौतिकवादी दर्शन है। इसे लोकायत-दर्शन अथवा जन साधारण का दर्शन भी कहते हैं।

चार्वाक के अनुसार परलोक नहीं है इसलिए मृत्यु के साथ मनुष्य के अस्तित्व की समाप्ति हो जाती है और इंद्रियानंद ही जीवन का लक्ष्य है। चार्वाक दर्शन भौतिक पदार्थो के अतिरिक्त और कोई सत्ता नहीं मानता। इस दर्शन के अनुसार, चूँकि ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग, परलोक आदि का प्रत्यक्ष नहीं होता अर्थात् ये दिखाई नहीं पड़ते, इसलिए इनका अस्तित्व नहीं है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश में से यह आकाश की सत्ता स्वीकार नहीं करता क्योंकि उसके अनुसार आकाश का प्रत्यक्षीकरण नहीं होता है। इस दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण विश्व केवल चार तत्त्वों से ही बना है।

8.11 जैन-दर्शन

चार्वाक-दर्शन के समान जैन-दर्शन भी वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करता लेकिन आत्मा के अस्तित्व को मानता है। ये भी आस्तिक दर्शनों के समान मानते हैं कि दुःख वैचारिक नियंत्रण द्वारा और उचित ज्ञान एवं उचित दृष्टि तथा उचित आचरण द्वारा दूर किया जा सकता है। जैन-दर्शन के पहले प्रवर्तक तीर्थंकर ऋषभदेव के साथ अजितनाथ और अरिष्टनेमि का भी नाम लिया जाता है। जैन तीर्थंकरों की संख्या 24 है जिन्होंने वास्तव में जैन-दर्शन की स्थापना की। पहले तीर्थंकर जिन्होंने जैन-दर्शन के स्रोत का अनुभव किया आदिनाथ हैं। 24 वें और अंतिम तीर्थंकर का नाम वर्धमान महावीर है। उन्होंने जैन-धर्म को गति दी। महावीर का जन्म 599 ई. पू. हुआ था। उन्होंने 30 वर्ष की उम्र में सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया और सत्य-ज्ञान की प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या का जीवन बिताया। वे ब्रह्मचर्य के अखंड विश्वासी थे।

जैन का यथार्थवाद : सात प्रकार के मूल तत्त्व

जैनियों का विश्वास है कि ब्रह्मांड की भौतिक और पराभौतिक वस्तुओं के सात वर्ग होते हैं। इनके नाम हैं- जीव, अजीव, अस्तिकाय, बंध, संवर, निर्जन और मोक्ष। शरीर जैसे पदार्थ जो अस्तित्व में होते हैं उन्हें अस्तिकाय कहते हैं। 'समय' अनस्तिकाय है क्योंकि उसका कोई शरीर (आकार) नहीं। द्रव्य ही गुणों का आधार है। द्रव्य में जो गुण पाये जाते हैं उन्हें धर्म कहते हैं। जैनियों का विश्वास है कि द्रव्य में गुण होते हैं। ये गुण समय गुजरने के साथ बदलते हैं। जैन-विश्वास के अनुसार द्रव्य के गुण अनिवार्य, शाश्वत तथा अस्तित्व में परिवर्तनीय होते हैं। बिना अनिवार्य गुण के कोई वस्तु नहीं होती। इसलिए, गुण सभी चीजों में पाये जाते हैं। उदाहरण के रूप में चेतना आत्मा का गुण है; इच्छा, खुशी और दुःख इसके परिवर्तनीय गुण हैं।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. षड्दर्शन कितने प्रकार के हैं?

   ....

2. सांख्य-दर्शन के संस्थापक का नाम बतायें?

   ....

3. योग के प्रवर्तक कौन थे?

   ....

4. न्याय सूत्र का लेखक किसको कहा जाता है?

   ....

5. दर्शन का कौन सा सिद्धांत कहता है कि वेद् शाश्वत हैं और समस्त ज्ञान के भण्डार हैं?

....

6. उपनिषदों का दर्शन क्या है?

....

7. कौन सा सिद्धांत है जो ज्ञान को चार तत्त्वों के सहयोग से उत्पन्न मानता है, जो मृत्यु के बाद समाप्त हो जाते हैं?

....

8. जैन दर्शन में कितने तीर्थंकर हैं?

....

9. महावीर का जन्म कब हुआ?

....

10. कौन से तीर्थंकर का नाम वर्धमान महावीर है?

....

11. जैनियों के अनुसार सात मौलिक तत्त्वों का नाम बतायें।

....

8.12 बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन की नींव गौतम बुद्ध ने रखी थी। उनका जन्म 563 ईसा पूर्व नेपाल की पहाड़ियों के पास कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। जब वह कुछ दिन के ही थे, उनकी माता माया देवी का निधन हो गया। बचपन से ही उन्हें ध्यान करना रूचिकर लगता था। उनका विवाह 16 वर्ष की आयु में एक सुंदर राजकुमारी यशोधरा के साथ हुआ। विवाह के एक वर्ष पश्चात् उनके पुत्र हुआ जिसका नाम राहुल रखा गया। लेकिन 29 वर्ष की आयु में ही उन्होंने दुनिया में व्याप्त मृत्यु, बीमारी, गरीबी इत्यादि का समाधान प्राप्त करने के लिए पारिवारिक जीवन का त्याग कर दिया। वह वन में चले गए तथा सतत उन्होंने छः वर्षों तक साधना की। इसके पश्चात उन्होंने बिहार में बोधगया में पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान लगाया। यही वह स्थान है जहाँ इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ तथा वे बुद्ध के रूप में जाने गए। उन्होंने अपने महान सत्य और मुक्ति मार्ग के प्रचार के लिए बहुत यात्राएँ की। 80 वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हो गयी।

गौतम बुद्ध के तीन शिष्य उपाली, आनन्द और महाकश्यप ने गौतम बुद्ध की शिक्षाओं को याद किया तथा उन्हें उनके अनुयायिओं तक आगे बढ़ाया। यह विश्वास किया जाता है कि

बुद्ध की मृत्यु के बाद राजगृह में सभा बुलाई गई जिसमें उपाली द्वारा विनयपिटक (आदेश के नियम) और आनन्द द्वारा सुतपिटक (बुद्ध के उपदेश का सिद्धांत और नैतिकता) का संकलन और कुछ समय बाद बौद्ध दर्शन से युक्त अभिधम्मपिटक का संकलन किया गया।

मुख्य विशेषताएँ

बुद्ध ने जीवन के सरल सिद्धान्त और एक व्यवहारिक नीतिशास्त्र प्रस्तुत किया जिसका व्यक्ति सरलतापूर्वक पालन कर सके। बुद्ध संसार को दुखों से पूर्ण मानते हैं। इस दुःखपुर्ण संसार से मुक्ति खोजना मनुष्य का कर्त्तव्य है। बुद्ध ने पारम्परिक पुस्तकें (पवित्र या धार्मिक पुस्तकें) जैसे वेद में अन्धविश्वास रखने की दृढ़ता से आलोचना की है। बुद्ध की शिक्षाएँ बहुत ही व्यावहारिक हैं। उनकी शिक्षाएँ बताती हैं कि मानसिक शान्ति और इस भौतिक जगत से मुक्ति कैसे प्राप्त करें।

चार महान सत्यों की प्राप्ति – बुद्ध द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान चार आर्य सत्यों में व्यक्त होता है, जो इस प्रकार हैं :–

(अ) **मानव जीवन में दुःख :** जब बुद्ध ने बीमारी, पीड़ा और मृत्यु से दुःखी व्यक्ति को देखा तब वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मानव जीवन में निश्चित रूप से दुःख विद्यमान है। जन्म के साथ ही दुःख भी आ जाता है। सुख से वंचित होना भी दुःखपूर्ण है। वे सारी कामनाएँ जो कि पूर्ण नहीं हो पाती दुःखपूर्ण है। दुःख भी तभी होता है जब इन्द्रिय सुख की वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार जीवन दुःखपूर्ण है।

(ब) **दुःख का कारण है :** दूसरा महान सत्य दुःख के कारण से सम्बन्धित है। यह तृष्णा ही है जो जन्म और मृत्यु के चक्र में बाँधती है। इसीलिए तृष्णा ही दुःख का मूल कारण है।

(स) **दुःख से मुक्ति संभव है** – तीसरा आर्य सत्य है कि जब अभिलाषाएँ, इच्छाएँ और जीवन के प्रति आसक्ति पूर्णतः समाप्त हो जाती है, तब दुःख समाप्त हो जाता है। यह सत्य दुःख से मुक्ति का मार्ग बताता है जिससे मानव जीवन में कष्ट आते हैं। इसमें अहं, मोह, ईर्ष्या, सन्देह और दुःख का विनाश भी सम्मिलित है। मन की यह स्थिति इच्छा, दुःख और प्रत्येक प्रकार के मोह से छुटकारा की स्थिति होती है। यह पूर्ण शान्ति की स्थिति होती है जो कि निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करती है।

(द) **मुक्ति का मार्ग** – चौथा आर्य सत्य दुःख से मुक्ति का मार्ग है। इसका तात्पर्य है कि हमें एक ऐसे मार्ग पर चलना है जो हमें मुक्ति की ओर ले जाये। इस प्रकार बुद्ध का दर्शन निराशावाद से आरम्भ होकर आशावाद की ओर ले जाता है। मानव जीवन में निरन्तर दुःख विद्यमान है जिसे पूर्णरूप से समाप्त किया जा सकता है। बुद्ध बताते हैं कि अष्टांगिक मार्ग, मुक्ति की ओर ले जाने वाला मार्ग है जिसके माध्यम से निर्वाण की प्राप्ति की जा सकती है।

मुक्ति (निर्वाण) का अष्टांगिक मार्ग

(i) **सम्यक् दृष्टि** — हम अज्ञानता को दूर कर सम्यक् दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। अज्ञानता संसार और आत्मा के बीच सम्बन्धों की गलत अवधारणा को जन्म देती है। मनुष्य अज्ञान के कारण इस अस्थिर संसार को स्थिर संसार के रूप में मानता है। इस प्रकार संसार और सांसारिक वस्तुओं के प्रति सही दृष्टिकोण ही सम्यक् दृष्टि है।

(ii) **सम्यक् संकल्प** — यह उन विचारों और इच्छाओं को समाप्त करने की दृढ़ इच्छा शक्ति है जो कि दूसरों को हानि पहुँचाते हैं। इसमें दूसरों के प्रति त्याग, सद्भावना और करूणा को सम्मिलित किया जाता है।

(iii) **सम्यक् वाक्** — मनुष्य को सम्यक् संकल्प द्वारा अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए। इसका तात्पर्य दूसरों की निन्दा करने, झूठे और अशोभनीय शब्दों से बचना है।

(iv) **सम्यक् चरित्र** — इसका तात्पर्य मानव जीवन को हानि पहुँचाने वाले क्रियाकलापों से बचना है। इसका अर्थ है कि हमें चोरी, अत्यधिक भोजन ग्रहण करना, सौन्दर्य प्रसाधन, जवाहरात, आरामदायक आसन, स्वर्ण इत्यादि के प्रयोग से दूर रहना है।

(v) **सम्यक् आजीविका साधन** — इसका तात्पर्य अपना जीवन उचित साधनों द्वारा चलाना है। अनुचित साधनों जैसे धोखा, रिश्वत् चोरी इत्यादि जैसे गलत और बुरे साधनों द्वारा धन कमाना कभी भी उचित नहीं है।

(vi) **सम्यक् प्रयत्न** — बुरे विचारों और बुरे प्रभावों को त्यागना भी अत्यन्त आवश्यक है। इसमें आत्म नियंत्रण, इन्द्रिय सुख और बुरे विचारों का निषेध और अच्छे विचारों के जन्म को शामिल किया जाता है।

(vii) **सम्यक विचार** — इसका तात्पर्य अपने शरीर, हृदय और मन को उसके वास्तविक रूप में रखना है। जब बुरे विचार मन पर हावी हो जाते हैं तो उनके वास्तविक रूप को भुला दिया जाता है। जब बुरे विचारों के अनुसार कार्य किया जाता है तब हमें दु:ख भोगना पड़ता है।

(viii) **सम्यक् ध्यान** — यदि एक व्यक्ति उपर्युक्त सात सिद्धान्तों का पालन करेगा तो वह उचित और सही रूप से ध्यान करने में समर्थ होगा। हम ध्यान के द्वारा निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं।

चार्वाक दर्शन को छोड़कर आत्मा का ज्ञान भारत के सभी दर्शनों का मुख्य उद्देश्य रहा है।

विक्टर कजिन, महान फ्रांसीसी दार्शनिक, ने ठीक कहा है कि संक्षेप में भारत मे दर्शन का पूर्ण इतिहास निहित है। जब हम पूर्व के काव्य और दार्शिनिक ग्रन्थों को ध्यान से पढ़ते हैं तो विशेष रूप से भारत के जो अभी यूरोप में फैलने लगे हैं, हम उनमें सत्य के दर्शन करते हैं, वे सत्य जो गहनतम हैं, और जो उन निकृष्ट परिणामों के विरुद्ध हैं जहाँ यूरोपीय प्रतिभा कभी कभी रुक जाती है। हमें पूर्व के दर्शन के सामने घुटने टेकने पर बाध्य होना पड़ता है और हमें इस मानव जाति के पालने में उच्चतम दर्शन की जन्मभूमि के दर्शन होते हैं।

मुझे यकीन है कि आप बौद्ध धर्म के बारे में जानना पसन्द करेंगे। हम बिहार में बोध गया चलेंगे और श्रद्धापूर्वक इस प्राचीन मार्ग पर चलेंगे। महाबोधी वृक्ष से आरम्भ करें जहाँ कुछ आश्चर्यजनक हुआ। सत्य की प्राप्ति या आध्यात्मिक प्रकाश। परम्परा बताती है कि बुद्ध वहाँ बोध गया में ज्ञान प्राप्ति के बाद सात सप्ताह तक रहे।

वहाँ आपको अनिमेषलोच स्तूप के भी दर्शन करने चाहिएँ जिसमें बुद्ध की खड़ी हुई प्रतिमा है जो इस वृक्ष की ओर टकटकी लगाकर निहार रही है। बौद्धगया उन हिन्दुओं द्वारा भी सम्मान से देखा जाता है जो विष्णुवाद मन्दिर में मृत व्यक्तियों के लिए शान्ति और सुख की कामना करते हुए 'पिण्ड दान' करने जाते हैं।

आप राजगिर की भी यात्रा कर सकते हैं और चीनी यात्री फाह्यान के साथ भी अनुभवों को बांट सकते हैं जिन्होंने बुद्ध की मृत्यु के (900) साल बाद इस स्थान के दर्शन किए। वह इस बात पर रोने लगा कि क्यों वह भगवान बुद्ध द्वारा यहां दिए गए उपदेशों को नहीं सुन पाया। बहुत सी कहानियाँ जो आप बुद्ध के विषय में सुनते हैं, उनका भी मूल यहीं है। जरा कल्पना कीजिए यहाँ एक गुफा में निवास करते हुए बुद्ध अपनी पहली भिक्षा मांगने की यात्रा पर निकलते हैं। यहीं मौर्य राजा बिम्बिसार ने बुद्ध धर्म को स्वीकार किया था। आपको सम्भवतः वह कहानी भी याद होगी जब देवदत्त ने बुद्ध को मरवाने के लिए एक पागल हाथी छोड़ा था। हाँ, वह घटना यहीं पर हुई थी। अन्त में, राजगिरि से ही बुद्ध अपनी अन्तिम यात्रा पर चल पड़े। पहली बुद्ध संगति यहीं सप्तपर्णी गुफा में हुई थी जहाँ अलिखित बुद्ध की शिक्षाओं को उनकी मृत्यु के बाद लिपिबद्ध किया गया। मठ सम्बन्धी संस्थाओं की अवधारणा भी यहीं पर उपजी जो बाद में शैक्षिक और धार्मिक केन्द्रों के रूप में विकसित हुई।

आप अगले पाठ स्थापत्यकला में नालन्दा विश्वविद्यालय के बारे में पढ़ेंगे। यह ईसापूर्व पांचवी शताब्दी में बना था। यह विश्व की प्राचीनतम विश्वविद्यालय है। क्योंकि बुद्ध ज्ञान को प्रोत्साहित करते थे, अनेक भिक्षु और विद्वान यहाँ प्रवचन सुनने आते थे। यहां तक कि 5वीं शताब्दी ई.पू. में नालन्दा गुप्त वंश के अन्तर्गत सुप्रसिद्ध विश्वविद्यालय के सम्मान को प्राप्त कर सका।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. गौतम बुद्ध के बचपन का नाम क्या था?

   ....

2. गौतम बुद्ध ने किस स्थान पर ध्यान किया?

   ....

3. गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति कहां हुई?

   ....

4. पिटक क्या है?

   ....

5. विनयपिटक किसने बनाई?

   ....

6. गौतम बुद्ध के चार आर्य सत्य क्या हैं?

   ....

7. भारत के किस दार्शनिक सिद्धांत में आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में विभिन्न विचार हैं?

   ....

आपने क्या सीखा

- धर्म की उत्पत्ति पूर्व-वैदिक काल से मानी जा सकती है।
- आदि भारत में धर्म का विकास पारंपरिक रीति के साथ साथ नास्तिकता के रूप में भी हुआ।
- भारतीय दर्शन की पद्धति जो वेदों से उत्पन्न हुई उसे आस्तिक दर्शन कहा जाता है।
- सांख्य दर्शन का मानना है कि जगत पुरुष और प्रकृति अर्थात् आत्मतत्व और अनात्मतत्व से बनता है।
- योग-दर्शन आत्म-साक्षात्कार का व्यावहारिक दर्शन है।
- न्याय-दर्शन तर्कपूर्ण चिन्तन की व्यवस्था प्रदान करता है।

- वैशेषिक-दर्शन वस्तु-जगत के निर्माण-संबंधी सिद्धान्त प्रदान करता है।
- मीमांसा-दर्शन मूलतः वेद-ग्रंथों का विश्लेषण है।
- चार्वाक, जैन और बौद्ध-दर्शन नास्तिक-दर्शन कहलाते हैं।
- चार्वाक भौतिकवादी दर्शन है। इसका विश्वास है कि भौतिक तत्वों के अतिरिक्त अन्य की सत्ता नहीं होती।
- जैन-दर्शन के अनुसार, निर्वाण (मोक्ष) का अर्थ है जीव का पदार्थ (शरीर) से निकल जाना।
- महात्मा बुद्ध का ज्ञान चार आर्य-सत्य में प्रतिबिम्बित हुआ — (i) जीवन में दु:ख है, (ii) दु:ख का कारण है, (iii) दु:ख का अंत है, (iv) दु:ख-निरोध का तरीका है।
- बुद्ध ने मुक्ति का अष्टांगिक मार्ग बताया — (i) सम्यक् दृष्टि, (ii) सम्यक् संकल्प, (iii) सम्यक् वाक्, (iv) सम्यक् चरित्र, (v) सम्यक् आजीविका, (vi) सम्यक् कर्म, (vii) सम्यक् ज्ञान, (viii) सम्यक् ध्यान।

पाठान्त प्रश्न

1. प्राचीन भारत की धार्मिक आन्दोलनों की विभिन्न विशेषताएँ परिभाषित कीजिए।
2. भारत में धार्मिक आंदोलनों में चार्वाक सिद्धांत की भूमिका क्या थी?
3. चार्वाक सिद्धांत अन्य दार्शनिक सिद्धांतों से किस प्रकार भिन्न है?
4. षड् दर्शन आस्तिक दर्शन कैसे कहलाते हैं?
5. बौद्ध दर्शन किस प्रकार एक अच्छे मानव के निर्माण में सहयोग देता है?
6. आप कैसे कह सकते हैं कि मीमांसा दर्शन वैदिक ग्रन्थों का विश्लेषण है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1
1. आरण्यक और उपनिषद्
2. कर्म का अधिनियम
3. वैष्णव, शैव और शक्तिवाद
4. दैवी माता, समृद्धि एवं शक्ति की देवी है।
5. अगमन्त, शुद्ध और वीर शैव धर्म

8.2 1. छः

2. कपिल, जिसने सांख्य-सूत्र लिखे

3. पतंजलि का योग सूत्र

4. गौतम

5. मीमांसा सिद्धांत

6. वेदांत वेदों का अंतिम भाग

7. चार्वाक सिद्धांत

8. 24

9. 599 ई.पू.

10. 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर

11. जीव, अजीव, अस्तिकाय, बंध, संवर, निर्जर और मोक्ष।

8.3 1. सिद्धार्थ

2. बौद्ध गया, बिहार में पीपल वृक्ष के नीचे।

3. बौद्ध गया, बिहार

4. बुद्ध के उपदेश या सिद्धांत एवं नीति शास्त्र

5. उपाली

6. मानवीय जीवन में दु:ख है।

   दु:ख का कारण है।

   दु:ख का अंत है।

   दु:ख-निरोध का मार्ग है।

7. चार्वाक सिद्धांत